दानिय्येल नामक पुस्तक

1 यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य[a]
के तीसरे साल में बेबिलोन के राजा
नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम पर चढ़ाई करके
उसे घेर लिया। 2 तब परमेश्वर ने यहूदा के
राजा यहोयाकीम को परमेश्वर के भवन[b]
के तमाम बर्तनों सहित उसके हाथ में कर
दिया। उसने[c] उन बर्तनों को शिनार देश
में अपने देवता के मन्दिर में ले जाकर
वहीं के भण्डार में रख दिया। 3 इसके बाद
राजा ने अपने खोजों के प्रधान अशपनज
को हुक्म दिया कि इस्राएली राजपुत्रों और
नामी-गिरामी,[d] पुरुषों में से कुछ युवाओं को
लाए। 4 इन्हें बिना खोट का, सुन्दर, सब तरह
की बुद्धि से भरपूर, ज्ञान में माहिर, विद्वान
और राजमन्दिर में हाज़िर रहने के लायक
हों। साथ ही इन्हें कसदियों का शास्त्र और
भाषा सिखायी जाए। 5 राजा ने यह आज्ञा भी
दी कि उसके खाने और दाखमधु में से उन्हें
हर दिन दिया जाए। इस तरह तीन साल तक
उनकी परवरिश होने के बाद उन्हें राजा के
सामने उपस्थित किया जाए। 6 इनमें यहूदा
के वंश के दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल
और अजर्याह नामक यहूदी थे। 7 खोजों के
मुखिया ने उनके नाम बदल डाले अर्थात
दानिय्येल का बेलतशस्सर, हनन्याह का
शद्रक, मीशाएल का मेशक और अजर्याह का
नाम अबेदनगो रखा। 8 लेकिन दानिय्येल ने
यह इरादा कर लिया था कि वह राजा का
खाना खा कर और उसके पीने का दाखमधु
पीकर अपवित्र नहीं होगा। इसलिए उसने
खोजों के मुखिया से प्रार्थना की कि उसे
अपवित्र न होना पड़े। 9 परमेश्वर ने खोजों के
प्रधान के मन में दानिय्येल के प्रति दया और
करुणा डाल दी थी। 10 खोजों के प्रधान ने
दानिय्येल से कहा, “मुझे अपने स्वामी-राजा
से डर लगता है, जिस ने तुम्हारे खाने और
पीने की वस्तुओं को ठहराया है। क्योंकि
तुम्हारे चेहरे तुम्हारी उम्र के दूसरे नवजवानों
की तुलना में उतरे हुए से क्यों हों? ऐसा
अगर हुआ, तो मेरा सिर धड़ से अलग कर
दिया जाएगा।” 11 तब खोजों के प्रधान द्वारा
दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह
पर ठहराए गए अधिकारी से दानिय्येल ने
कहा, 12 अपने सेवकों[e] की दस दिन तक
तुम जाँच करो और हमें खाने के लिए सिर्फ
साग-सब्ज़ी और पीने के लिए पानी दिया
जाए। 13 इसके बाद जो लोग राजा द्वारा
ठहराए गए भोजन को खाएँगे उनके साथ
हमारी, जो केवल साग-पात खाएँगे, तुलना
की जाए। उस आधार पर सब कुछ देखने
के बाद यह फैसला किया जाए कि हम क्या
खाएँगे और पीएँगे।” 14 इसलिए इस विषय
पर उसने अपना मत दिया और उन्हें दस दिन
तक परखा गया। 15 दस दिनों के बाद यह
पाया गया कि देखने में ये जवान उन जवानों
से ज़्यादा तन्दरुस्त हैं। जो राजा के खाने में
से खाया करते थे। 16 इसलिए प्रधान ने उन्हें
राजा के खाने में से न देकरकेवल साग-सब्ज़ी
खाने के लिए दी। 17 जहाँ तक इन चार
नवजवानों का सवाल है, परमेश्वर ने उन्हें
ज्ञान, बुद्धि और साहित्य के सभी दायरों
में निपुण किया। दानिय्येल तो दर्शनों और

[a] **1.1** शासनकाल [b] **1.2** मन्दिर [c] **1.2** नबूकदनेस्सर [d] **1.3** प्रतिष्ठित [e] **1.12** हम लोगों

स्वप्नों के मतलब को समझने की योग्यता
रखता था। 18 जब उन्हें राजा के सामने मौजूद
होने का समय आया, तो खोजों को प्रधान
उन्हें राजा नबूकदनेस्सर के सामने लाया।
19 राजा ने उन से बात की और दानिय्येल,
हनन्याह, मीशल और अजर्याह की तरह और
किसी को न पाया। इसलिए वे राजा की सेवा
करने लगे। 20 बुद्धि और ज्ञान से संबन्धित जो
कुछ भी राजा ने उन से पूछा, उसने यह पाया
कि वे देश में सारे जादूगरों और ज्योतिषियों
से दस गुना अधिक हैं। 21 दानिय्येल कुस्त्रू [a]
राजा के शासन के पहले साल तक रहा।

2 नबूकदनेस्सर के शासन-काल के दूसरे
वर्ष में, उसने ऐसा स्वप्न देखा, जिस की
वजह से वह परेशान हो उठा और उसकी नींद
उड़ गयी। 2 तब उसने यह आदेश दिया कि
जादूगरों, ज्योतिषियों, टोन्हों और कसदियों
को बुलाया जाए ताकि वे राजा को उसके
स्वप्न बतलाएँ। इसलिए वे सभी उसके
सामने आए। 3 राजा ने उन से कहा, "मैंने एक
स्वप्न देखा है, जिस के कारण मैं परेशान हूँ
कि आखिर इसका मतलब क्या है।" 4 तब
कसदी लोग सीरियाई भाषा में राजा से बोले,
"हे राजा, आप सदा जीवित रहें। आप हमें [b]
अपना स्वप्न बताएँ और हम आपको उस
का मतलब बतला देंगे। 5 राजा ने कसदियों
को जवाब में कहा, "मुझे अभी कुछ याद
नहीं है। यदि तुम मुझे अर्थ सहित मेरा स्वप्न
नहीं बता सकोगे, तो तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े
कर दिए जाएँगे। हाँ, तुम्हारे घर भी कचरे
के ढेर के समान कर दिए जाएँगे। 6 लेकिन
अगर तुम अर्थ के साथ स्वप्न बता सकोगे,
तो मैं तुम्हें ईनाम दान और खास इज़्ज़त
दूँगा। इसलिए अब तुम मुझे स्वप्न और
उस का मतलब बताओ।" 7 वे फिर बोले,
"राजा अपने सेवकों को स्वप्न बतलाए, तब
हम उस का मतलब बतला देंगे।" 8 राजा
ने कहा, "मैं जान गया हूँ कि तुम केवल
समय यों ही गँवा देना चाहते हो, क्योंकि
तुम्हें भी मालूम है कि मैं भी स्वप्न भूल
चुका हूँ। 9 लेकिन यदि तुम मुझे स्वप्न नहीं
बताओगे, तो तुम्हारे लिए एक ही आदेश
है। इसलिए कि तुमने योजना बनायी होगी
कि कुछ समय तक यों ही टाल-मटोल करते
रहो। इसलिए अब स्वप्न बता दो और मैं जान
लूँगा कि तुम इसका अर्थ भी बता सकोगे।"
10 कसदियों ने राजा से कहा, "इस दुनिया में
ऐसा कोई आदमी नहीं है, जो राजा के स्वप्न
को बता सके। आज तक किसी भी राजा,
प्रधान या शासक ने जादूगरों, ज्योतिषियों
और कसदियों से कभी भी ऐसी बातें नहीं
पूछी हैं। 11 राजा एक बहुत मुश्किल सवाल
कर रहे हैं। देवताओं को छोड़कर जो कि
इस पृथ्वी पर नहीं है और कोई राजा को
यह बता नहीं सकता। 12 इस कारणवश राजा
को बहुत गुस्सा आया, इतना अधिक कि
उसने बेबिलोन के सभी बुद्धिजीवियों को
मार डालने की आज्ञा दे डाली। 13 बुद्धिमान
लोगों के मारे जाने की आज्ञा दी जाने के
बाद, दानिय्येल और उसके साथियों की
भी बारी आयी। 14 राजा के सुरक्षा कर्मियों
का प्रमुख अर्योक बेबिलोन के बुद्धिजीवियों
को जान से मार डालने के लिए निकला।
तभी दानिय्येल ने सोच समझ कर अच्छी
सलाह दी। 15 उसने राजा के कॅप्टेन अर्योक
से कहा, "राजा की ओर से इस आदेश
को तुरन्त क्यों पूरा किया जाना है?" तब
अर्योक ने दानिय्येल को कारण बताया।
16 तब दानिय्येल राजा के पास गया और

[a] **1.20** सायरस [b] **2.4** अपने सेवकों को

कुछ समय की मोहलत[a] मांगी, ताकि वह
उसके स्वप्न का अर्थ बतला सके। 17 फिर
दानिय्येल ने वापस जाकर अपने साथियों
हनन्याह, मीशल और अजर्याह को सब कुछ
कह सुनाया। 18 ताकि इस रहस्य के बारे में
वे स्वर्ग के परमेश्वर की दया की याचना
करें। और बेबिलोन के दूसरे बुद्धिजीवियों
के साथ दानिय्येल और उसके साथी मारे
न जाएँ। 19 एक रात के दर्शन में दानिय्येल
को स्वप्न का अर्थ दिया गया। 20 दानिय्येल
बोल उठा, "सदा काल तक परमेश्वर का
धन्यवाद हो, बुद्धि और शक्ति उन्हीं की है।
21 वही समय और काल में बदलाव लाते हैं।
वही राजा को गद्दी से हटाते और गद्दी पर
बैठाते हैं। वही अक्लमन्द को अक्ल देते
हैं, जो समझ रखते हैं, उन्हें वह ज्ञान देते
हैं। 22 वह छुपी हुयी और गहरी बातों को
प्रगट करते हैं। उन्हें मालूम है कि अंधेर में
क्या है, उनमें रोशनी का निवास है। 23 मेरे
बापदादों के परमेश्वर मैं आपको धन्यवाद
और स्तुति देता हूँ, आपने मुझे अक्ल और
शक्ति[b] दी है। हम ने आप से जो चाहा,
वह मुझे बता दिया है, इसलिए कि राजा
के स्वप्न के अर्थ को हमें बता दिया है।"
24 इसलिए दानिय्येल अर्योक के पास गया,
जिसे परमेश्वर ने बुद्धिमान लोगों को नाश
करने के लिए ठहराया था। उसने उससे कहा,
"बेबिलोन के बुद्धिजीवियों को मारो मत।
मुझे राजा के पास ले चलो और मैं स्वप्न
का मतलब बता दूँगा।" 25 तब अर्योक तुरन्त
दानिय्येल को राजा के पास ले गया और
राजा से कहा, "यहूदा से बन्धुआई में लाए
गए लोगों में से एक आदमी मैंने ऐसा पा लिया
है, जो राजा के स्वप्न का अर्थ बता सकेगा।"
26 राजा दानिय्येल[c] से बोला, "क्या तुम
अर्थ सहित मेरे स्वप्न को बता सकोगे?"
27 राजा की उपस्थिति में दानिय्येल ने उत्तर
दिया, "राजा ने जिस गुप्त बात की माँग की
है, उसे बुद्धिजीवी, ज्योतिषी, जादूगर और
भविष्यद्वक्ता नहीं बता सकते हैं। 28 लेकिन
स्वर्ग में एक परमेश्वर है, जो सब छुपी बातों
को दिखा सकते हैं और अन्त के दिनों में
जो होने वाला है, उसे राजा नबूकदनेस्सर
को बता सकते हैं। आपके स्वप्न और दर्शन
जो आपने अपने बिस्तर पर देखे ये हैं; 29 "हे
राजा, बिस्तर पर पड़े-पड़े आप सोच रहे थे
कि यहाँ के बाद क्या होगा। जो सब रहस्यों
को बताने वाले हैं, वह आपको बताएँगे कि
क्या होने वाला है। 30 जहाँ तक मेरा प्रश्न है,
मुझे ये छिपी बातें इसलिए मालूम नहीं हो
गयीं क्योंकि इस पृथ्वी पर जीवित किसी
दूसरे[d] व्यक्ति से मैं अधिक बुद्धिमान हूँ।
लेकिन इसलिए कि स्वप्न का मतलब राजा
को बताया जाए और आप भीतर के विचारों
को जान सकें। 31 हे राजा, आपने एक बड़ी
मूर्ति देखी। यह भव्य-मूर्ति जो आपके सामने
खड़ी थी, अद्वितीय चमक से मरी थी और
दिल दहला देने वाली थी। 32 इस मूर्ति का
सिर शुद्ध सोने का, छाती चाँदी की, इसका
पेट और जाँघें पीतल की। 33 इसकी टाँगें
लोहे की, इसके पाँव कुछ लोहे के और कुछ
मिट्टी के थे। 34 देखते-देखते एक पत्थर बिना
किसी के खोदे खुद-ब-खुद उखड़ कर, मूर्ति
के पाँव पर आ गिरा। और लोहे तथा मिट्टी
के उन पाँवों को चूरा कर डाला। 35 इसके
बाद लोहा, मिट्टी, पीतल, चाँदी और सोना
सभी टुकड़े-टुकड़े हो गए। गर्मी के मौसम
में खलिहानों के भूसे की तरह वह ऐसे उड़
गए, कि उनका नामो-निशान नहीं मिला वही
पत्थर जो मूर्ति पर जा लगा था, एक बड़ा

[a] **2.16** अवधि [b] **2.23** सामर्थ [c] **2.26** बेलतशस्सर [d] **2.30** अन्य

पहाड़ बन कर सारी पृथ्वी पर फैल गया।
36 "यह तो रहा सपना। अब राजा जी की
मौजूदगी में हम इसका अर्थ भी बतलाएँगे।
37 आप राजाओं के राजा हैं, क्योंकि स्वर्ग के
परमेश्वर ने आपको एक राज्य, अधिकार,
सामर्थ और शान दी है। 38 जहाँ कहीं भी
इन्सान रहते हैं, वहाँ परमेश्वर ने उन्हें, मैदान
के जानवर और आकाश के पक्षियों को भी
तुम्हारे अधीन कर दिया है। इन सभी के ऊपर
आप ही को शासक ठहराया है। सोने का
सिर आप ही हैं। 39 आपके बाद आप से कम
ताकत का एक राज्य उठ खड़ा होगा, उसके
बाद एक तीसरा राज्य आएगा, जो सारी
पृथ्वी के ऊपर शासन करेगा। 40 चौथा राज्य
लोहे की तरह मज़बूत होगा। लोहा सब चीजों
को तोड़ डालता है और चूर-चूर कर डालता
है और बिखेर डालता है। यह राज्य भी सब
कुछ चूर-चूर कर पीस डालेगा। 41 जैसा कि
आपने पाँव और उनकी उँगलियों को देखा
कि वे कुम्हार की मिट्टी और लोहे से बने हैं,
राज्य बंटा हुआ होगा। लेकिन इसमें लोहे की
मज़बूती भी होगी। 42 जैसे पांव की उँगलियाँ
लोहे और मिट्टी से बनी हुयी होंगी, वैसे ही यह
राज्य कुछ मज़बूत और कुछ कमज़ोर होगा।
43 आपने लोहे को कुम्हार की मिट्टी से मिला
हुआ देखा था, इसका मतलब यह है कि इस
राज्य के लोग दूसरे लोगों से मिले-जुले तो
रहेंगे, लेकिन जिस तरह लोहा, मिट्टी के साथ
एक जान नहीं हो सकता, वैसे ही वे भी एक
बने नहीं रह पाएँगे। 44 इन राजाओं के शासन
काल में स्वर्ग के परमेश्वर एक ऐसे राज्य
को उठा खड़ा करेंगे, जो कभी भी बर्बाद नहीं
किया जा सकेगा। वह किसी दूसरे लोगों के
हाथ में भी नहीं जाएगा, लेकिन वह उन सभी
राज्यों को चूर-चूर करके खत्म कर डालेगा,
लेकिन स्वयं हमेशा बना रहेगा। 45 बिल्कुल
उसी तरह जैसा तुमने देखा था कि बिना
हाथों की मदद से पत्थर, पहाड़ से काटा
गया। फिर इसने लोहे, पीतल, मिट्टी, चाँदी
और सोने को तोड़ डाला। महान परमेश्वर
ने राजा को वह सब दिखा दिया है, कि
इसके बाद क्या होने वाला है। स्वप्न और
उस का अर्थ दोनों ही निश्चित हैं। 46 यह
सुन कर नबूकदनेस्सर दानिय्येल के सामने
नतमस्तक हो गया और आदेश जारी कर
दिया कि उसे भेंट दी जाए और उसके सामने
धूप जलायी जाए। 47 राजा ने दानिय्येल से
कहा, "तुम्हारे परमेश्वर सचमुच ईश्वरों का
परमेश्वर, राजाओं का प्रमुख, गुप्त बातों
को बताने वाले हैं। सबूत यह है कि तुम
रहस्य को खोल सके हो।" 48 राजा ने,
दानिय्येल को ऊँचा पद दिया, तमाम ईनाम
दिए, बेबिलोन के ऊपर गवर्नर ठहराया और
बेबिलोन के सभी बुद्धिजीवियों का मुख्य
प्रधान बना दिया। 49 दानिय्येल ने राजा से
बिनती करके शद्रक, मेशक और अबेदनगो
को बेबिलोन के प्रान्त की ज़िमेंदारियाँ दीं।
लेकिन दानिय्येल खुद राज-दरबार में ही रहा
करता था।

3 नबूकदनेस्सर राजा ने सोने की एक
मूर्ति बनवायी। इसकी ऊँचाई साठ
हाथ और चौड़ाई छः हाथ थी। उसने
इस मूर्ति को दूरा नामक मैदान में जो
बेबिलोन के प्रान्त में है, स्थापित की। 2 फिर
नबूकदनेस्सर राजा ने अपने लोगों को भेजा
ताकि राजकुमारों, गर्वनरों, कप्तानों, जजों,
खजाँचियों, सलाहकारों, मॅजिस्ट्रेटों और
प्रान्त के सभी अधिकारियों को बुलवाया
ताकि वे सब मूरत के समर्पण समारोह
में आएँ। 3 तब राजकुमार, गर्वनर, कॅप्टेन,
न्यायी, खजाँची, सलाहकार, मॅजिस्ट्रेट और

प्रान्त के सभी अधिकारी नबूकदनेस्सर द्वारा
स्थापित मूरत के स्थापन समारोह में आकर
खड़े हुए। 4 तब ऊँची आवाज में घोषणा
की गयी, "सब देशों के लोग और तमाम
भाषाएँ बोलने वालो, आशा यह है, 5 "जब
तुम भिन्न-भिन्न तरह के बाजों, जैसे नरसिंगे,
बाँसुली, वीणा, सारंगी, सितार और शहनाई
आदि का शब्द सुनो, तो उसी समय गिर कर
नबूकदनेस्सर राजा द्वार खड़ी कराई मूरत को
सिज़दा[a] करो। 6 जो कोई ऐसा नहीं करेगा,
वह उसी समय धधकते हुए भट्टे के बीच
में डाल दिया जाएगा" 7 इस वजह से जैसे
ही लोगों ने नरसिंगे, बाँसुली, वीणा, सारंगी,
सितार शहनाई आदि बाजों की आवाज सुनी,
वैसे ही देश-देश और जाति-जाति के लोगों
और भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वालों ने गिर कर
उस सोने की मूरत को जो नबूकदनेस्सर ने
खड़ी कराई थी, दण्डवत् किया। 8 तभी कुछ
कसदी लोगो ने यहूदियों को चुगली खाई।
9 राजा के पास जाकर वे बोले, "राजा जी
आप सदा जीवित रहें! 10 राजा जी, आपका
यह आदेश था, कि नरसिंगे, बांसुली, वीणा,
सारंगी, सितार, शहनाई आदि का संगीत
सुन कर हर व्यक्ति को गिर कर सोने की
मूरत की उपासना करनी है, 11 और जो
कोई ऐसा न करेगा, वह धधकते हुए मट्टे
के भीतर डाल दिया जाएगा। 12 कुछ यहूदी
नवजवान शद्रक, मेशक और अबेदनगो को
आपने बेबिलोन प्रान्त के ऊपर अधिकारी
ठहराया है। हे राजा, इन्होंने आपके हुक्म
पर ध्यान नहीं दिया है। ये लोग आपके
परमेश्वर[b] की कोई परवाह नहीं करते और
न ही आपकी स्थापित मूरत की आराधना
करते हैं।" 13 तब नबूकदनेस्सर ने क्रोध और
जलजलाहट में आज्ञा दी, की शद्रक, मेशक
और अबेदनगो को उसके पास लाया जाए।
14 नबूकदनेस्सर ने कहा, "क्या यह सच है
शद्रक, मेशक, अबेदनगो कि तुम लोग मेरे
देवताओं की उपासना नहीं करते हो या मेरी
स्थापित की हुई मूरत को दण्डवत् नहीं करते
हो? 15 अभी जब नरसिंगे, बांसुली, वीणा,
सारंगी, सितार और शहनाई की आवाज
सुनने पर यदि तुम लोग मेरी बनवायी मूरत
के सामने गिर कर दण्डवत् करो, तो ठीक
है। लेकिन यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो
तुम्हें उसी समय जलती आग की भट्टी में
डाल दिया जाएगा। फिर तुम्हें मेरे हाथों
से कौन छुड़ा पाएगा? 16 शद्रक, मेशक
और अबेदनगो ने राजा को उत्तर दिया, "हे
नबूकदनेस्सर, इस बारे में हमें कुछ नहीं
कहना है। 17 हे राजा, यदि ऐसा होता भी है,
तो हम जिस परमेश्वर की सेवा करते हैं, वह
हमें जलती हुयी भट्टी में से निकाल लेने की
भी शक्ति रखते हैं। 18 लेकिन यदि वह ऐसा
नहीं भी करते हैं, तौभी हम आपके देवताओं
की सेवा नहीं करेंगे, न ही आपकी स्थापित
सोने की प्रतिमा की पूजा करेंगे।" 19 यह
सुनते ही नबूकदनेस्सर गुस्से से मर गया और
शद्रक, मेशक और अबेदनगो के खिलाफ़
उस का चेहरा बदल गया। इसलिए उसने
यह हुक्म दिया कि सामान्य तपन से सात
गुना ज़्यादा जलती भट्टी को तेज कर दिया
जाए। 20 तब उसने अपनी फ़ौज के कुछ सब
से अधिक शक्तिशाली लोगों को आज्ञा दी कि
शद्रक, मेशक और अबेदनगो को धधकती
भट्टी में डाल दें। 21 तब ये लोग उनके मोज़ों,
अंगरखों[c], बागों और दूसरे कपड़ों के साथ
ही बाँधे गए और धधकती भट्टी में फेंक दिए
गए। 22 इसलिए कि राजा की आज्ञा तुरन्त
मानी जानी चाहिए थी और भट्टी बहुत तेज

[a] 3.5 दण्डवत [b] 3.12 देवताओं [c] 3.21 कोटी

धधकता दी गयी थी, आग की उन लपटों ने उन लोगों को भी जला डाला, जिन्होंने इन तीनों को भट्टी में डाला था। 23 शद्रक, मेशक और अबेदनगो बँधे हुए धधकती भट्टी के बीचो-बीच जा पड़े थे। 24 नबूकदनेस्सर राज बहुत आश्चर्य से मर गया और जल्दी से उठ कर अपने सलाहकारों से बोला, "क्या हम ने आग की भट्टी में तीन लोग नहीं डाले थे?" वे बोले, "हाँ राजा जी, तीन ही जन डाले थे।" 25 राजा ने जवाब में कहा, "देखो मैं भट्टी में चार जन को टहलते हुए देख रहा हूँ और उन्हें किसी तरह का नुकसान भी नहीं हुआ है। और चौथा जन परमेश्वर के पुत्र की तरह है।" 26 तब नबूकदनेस्सर ने भट्टी के सिरे[a] के पास जाकर कहा, "हे शद्रक, मेशक और अबेदनगो, हे परम प्रधान परमेश्वर के सेवकों, बाहर निकल कर आओ।" यह सुनते ही शद्रक, मेशक और अबेदनगो आग के बीच से निकल कर आए। 27 जब अधिकारी, हाकिम गवर्नर और राजा के मन्त्रियों ने इन पुरुषों को देखा तो उनकी देह आग से झुलसी तक नहीं थी। उनका एक बाल तक भी नहीं जला था, न ही उनके मोज़े जले और न ही जलने की गंध आयी। 28 नबूकदनेस्सर बोल उठा, "शद्रक, मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर आप महान हैं, जिन्होंने अपने दूत को भेज कर अपने इन सेवकों को इसलिए बचाया, क्योंकि इन्होंने राजा का हुक्म न मानकर आपके ऊपर ही भरोसा रखा। इन्होंने अपने परमेश्वर को छोड़कर किसी और देवता की पूजा न कर अपने आप का त्याग किया। 29 इसलिए अब मैं यह आदेश देता हूँ कि किसी भी देश या कोई भाषा बोलने वाला शद्रक, मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर के विरोध में बोले तो उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएँगे और उस का घर धुए का ढेर बना दिया जाएगा। क्योंकि ऐसा कोई परमेश्वर नहीं है जो इस तरह से बचा सके।" 30 तब राजा ने शद्रक, मेशक और अबेदनगो के पदों को अपने बेबिलोन राज्य में ऊँचा उठा दिया।

4 नबूकदनेस्सर राजा की ओर से देश-देश और जाति-जाति के लोगों और अलग-अलग भाषा बोलने वाले को जो इस दुनिया में रहते हैं, यह वचन दिया गया "तुम सभी का कुशल हो। 2 मुझे यह बात अच्छी लगी कि मैं उन चिन्हों और अजीब कामों के बारे में बताऊँ जो परमेश्वर ने मेरे लिए किए हैं। 3 उनके चिन्ह कितने बड़े हैं और उनके किए गए अजीब काम कितने सामर्थी हैं। उनका राज्य हमेशा का है और उनका शासन पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहता है। 4 मैं नबूकदनेस्सर अपने महल में आराम से रहा करता था और संपन्न था। 5 एक रात मैंने एक स्वप्न देखा, जिस से मैं डर गया। बिस्तर पर ही स्वप्न के बारे में बहुत परेशान था। 6 इसलिए मैंने यह आदेश निकाला कि बेबिलोन के सभी बुद्धिमान लोगों को मेरे पास लाया जाए, ताकि वे मेरे स्वप्न के मतलब को बतला सकें। 7 तब जादूगर, ज्योतिषी, कसदी और भविष्य बताने वाले आए। तब मैंने उन्हें अपना स्वप्न बतलाया, लेकिन वे उस का अर्थ न बतला सके। 8 अन्त में दानिय्येल मेरे पास लाया गया। उस का नाम बेलतशस्सर है जो कि मेरे देवता का नाम भी हैं। पवित्र परमेश्वर की आत्मा उसमें है, मैंने उसी को यह कह कर अपना स्वप्न बताया, 9 "तुम सभी ज्योतिषियों[b] में प्रमुख हो, मुझे मालूम

[a] 3.26 मुँह [b] 4.8 बुद्धिमानों

है कि पवित्र परमेश्वर की आत्मा तुम में
रहती है और तुम किसी बात से परेशान नहीं
होते हो। तुम मेरे देखे हुए स्वप्न-दर्शन और
उसके अर्थ को बतलाओ। 10 बिस्तर पर
पड़े हुए मैंने ये दर्शन देखे। मैंने पृथ्वी के
बीच ही में एक पेड़ देखा, जो बहुत ऊँचा
था। 11 यह पेड़ बढ़ता गया, मज़बूत होता
गया, वह इतना बढ़ता गया कि आकाश
को छूने लगा। दुनिया की सभी जगहों से
इसे देखा जा सकता था। 12 इसकी पत्तियाँ
सुंदर थीं और फलों से लदा हुआ था और
सभी के खाने के लिए काफी था। जानवर
इसकी छाया का आनन्द लिया करते थे।
आकाश की चिड़ियाँ इसकी डालियों पर
बैठा करती थीं। सब प्राणी उससे खाया
करते थे। 13 अपने बिस्तर पड़े-पड़े ही मैंने
दर्शन में देखा कि एक पवित्र पहरूआ स्वर्ग
से उतर आया। 14 ज़ोर से चिल्लाते हुए वह
बोला, उस पेड़ को काट डालो और इसकी
डालियाँ छाँट डालो। इसकी पत्तियों को
फाड़ दो और फल को बिखेर दो। इसके
नीचे जानवर शरण न लें और चिड़ियों को
बसेरा न मिले। 15 लेकिन ज़मीन पर इस
पेड़ का ठूंठ रहने दो। और उसके लोहे
और पीतल के बंधन[a] से बांध कर मैदान
की घास के बीच रहने दो। वह आकाश की
ओस से भीगा करे और ज़मीन[b] की घास
खाने में जानवरों का संगी ठहरे। 16 इसका
हृदय[c] मनुष्य का न रहे, उसे पशु का सा मन
दिया जाए। इस तरह से सात साल बीत
जाएँ। 17 पहरूओं की तरफ़ से यह आदेश
दिया गया है। इसे पवित्र लोगों के वचन से
ठहराया जा चुका है, ताकि जीवित लोग
यह जान सकें कि इस दुनिया का शासक
परमेश्वर हैं। वह जिसे चाहते हैं, उसे दे
देते हैं। वह दीन व्यक्ति को सम्मान देते
हैं। 18 यह स्वप्न मैंने[d] ने देखा था। अब हे
बेलतशस्सर तुम इसका मतलब बतलाओ।
मेरे राज्य का कोई बुद्धिजीवी अर्थ बतलाने
में कामयाब नहीं हुआ। इसलिए कि तुम्हारे
भीतर परमेश्वर का आत्मा है, तुम अर्थ
बतला सकते हो। 19 तब दानिय्येल जिस का
नाम बेलतशस्सर है, एक घन्टे तक परेशान
रहा और उसके विचार उसे उलझन में
डाले रहे। राजा ने कहा, “बेलतशस्सर, इस
स्वप्न और इसके अर्थ की वजह से परेशान
मत हो।” बेलतशस्सर ने कहा, “मालिक
यह स्वप्न उसी के लिए हो जो आप से
नफ़रत करता हो और ये इसका अर्थ उसके
लिए जो आपका दुश्मन हो। 20 पेड़ जो बढ़
गया, मज़बूत था, जिस की ऊँचाई आकाश
तक पहुँच गयी थी और जिसे कहीं से भी
देखा जा सकता था। 21 जिस की पत्तियाँ
खूबसूरत थी, जो फलों से लदा था जिस में
से सभी खाते के, जिस की छाँव में जानवर
शरण लिया करते थे, जिस की डालियों पर
चिड़ियाँ बसेरा करती थी। 22 वह पेड़ आप
ही हैं राजा, जो बढ़ कर शक्तिशाली हो गए
हैं। आपकी महानता आकाश तक को छूने
लगी है और आपका अधिकार पृथ्वी के
छोर तक फैला हुआ है। 23 जहाँ तक पहरूए
और पवित्र जन[e] के स्वर्ग[f] नीचे उतरने वाले
का सवाल है, जिस ने पेड़ के काटे जाने,
ठूंठ के जड़ समेत छोड़े जाने और लोहे
तथा पीतल के बन्धन से बांध कर मैदान
की हरी घास के बीच रहने के लिए कहा,
ताकि वह ओर से भीगता रहे और मैदान के
जानवरों के साथ सात युग तक ऐसी हालत

[a] **4.15** जंजीर [b] **4.15** मैदान [c] **4.16** मन [d] **4.18** राजा नबूकदनेस्सर [e] **4.23** परमेश्वर [f] **4.23** ऊपर से, आकाश से

में रहे। 24 अब यह रहा इसका मतलब,
राजा जी और सर्वशक्तिमान परमेश्वर का
वह आदेश जो मेरे स्वामी राजा के खिलाफ़
निकल चुका है। 25 वे लोग आपको लोगों
के बीच से निकाल देंगे और आप पशुओं
के साथ रहेंगे। वे आपको बैल की तरह
खाने के लिए घास देंगे, वे आपको ऊपर से
गिरने वाली ओस से गीला करेंगे। इस तरह
से सात साल बीत जाएँगे, जब तक कि
आप यह न समझ लें, कि लोगों के ऊपर
परम प्रधान राज्य करते हैं और वह उसी
को दे देते हैं, जिसे चाहते हैं। 26 जहाँ तक
पेड़ के ठूंठ छोड़े जाने का प्रश्न है, आपको
आपका राज्य वापस लौटा दिया जाएगा,
जब आप यह समझ जाएँगे कि सही मायने
में राज्य करने वाले तो परमेश्वर ही हैं।
27 इसलिए, हे राजा, मेरी सलाह मानिए और
अपराधों को छोड़कर सही जीवन और
अधर्म को छोड़कर यदि दीन दुखियों पर
दया करने लगे, तो संभव है कि आपका
चैन और सुख वापस आ जाए। 28 यह सभी
बातें नबूकदनेस्सर के जीवन में घटनी शुरू
हुयीं। 29 बारह महीनों के बाद वह बेबिलोन
राज्य के राजमहल में टहल रहा था। 30 राजा
कहने लगा, “क्या यह बड़ा बेबिलोन नहीं,
जिसे मैंने अपनी ताकत और सामर्थ से
राजनिवास होने के लिए अपनी शान दिखाने
के लिए बसाया है?” 31 इन शब्दों का राजा
के मुँह से निकलना ही था, आकाश से
एक आवाज़ आयी, “हे राजा नबूकदनेस्सर
सुनो, तुम्हारा राज्य तुम्हारे साथ से निकल
चुका है। 32 तुम्हें लोग अपने बीच में निकाल
देंगे और तुम मैदान के जानवरों के साथ रहा
करोगे। वे तुम्हें घास खिलाएँगे, जैसे बैल
घास खाता है। सात साल बीत जाने के
बाद ही तुम यह सीख पाओगे कि मनुष्यों
के ऊपर शासन करने वाले परम प्रधान है
और वे उन जिस को चाहते हैं उसे दे देते
हैं। 33 उसी समय यह बात नबूकदनेस्सर में
पूरी हो गयी। वह मनुष्यों के बीच से बाहर
निकाला गया। वह बैल की तरह घास
खाने लगा। उसकी देह आकाश की ओस
से भीगती थी। उसके बाल गिद्ध के पंखों
की तरह और नाखून उसके पंजे की तरह
नहीं हो गए। 34 उन दिनों के बीतने के बाद,
मैं[a] ने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठायी।
तभी मेरी समझ मुझे वापस मिल गयी और
मैंने जीवित परमेश्वर की बढ़ाई की और
धन्यवाद देते हुए कहा, “उनकी प्रभुता सदा
का है, उनका राज्य पीढ़ी से पीढ़ी तक बना
रहने वाला है। 35 इस दुनिया में रहनेवाले
उनके सामने तुच्छ गिने जाते हैं। वह स्वर्ग
की फ़ौज और दुनिया में रहने वालों के बीच
अपनी इच्छा से काम करते हैं। उन्हें कोई
रोककर यह पूछ नहीं सकता है कि उन्होंने
क्या किया। 36 उसी वक्त मेरी बुद्धि ज्यों की
त्यों हो गयी और मेरे राज्य की महिमा की
महिमा के लिए मेरी शान और इज़्ज़त वापस
लौट आयी। मेरे मंत्री और प्रधान लोग मुझ
से मिलने आने लगे और मेरा राज्य फिर
से स्थिर हो गया और उस का शाही ठाठ
भी वापस आ गया। लोग मेरी बड़ाई भी
करने लगे। 37 अब मैं नबूकदनेस्सर स्वर्ग
के बादशाह[b] की बड़ाई करता हूँ, क्योंकि
उनके सभी काम में सच्चाई और इन्साफ़ है।
जो लोग घमण्ड करते हैं उन्हें वह शर्मिन्दा
कर सकते हैं।

5 बेलतशस्सर राजा ने अपने हज़ार प्रधानों
के लिए एक बड़ी दावत रखी और उनके

[a] **4.34** नबूकदनेस्सर [b] **4.37** राजा

सामने दाखमधु पिया। 2 पीते समय उसने
आदेश निकाल दिया। आदेश यह था कि
जिन सोने-चाँदी के बर्तनों को उस का पिता
नबूकदनेस्सर यरूशलेम के मन्दिर से लाया
था, वे सभी लाए जाएँ। ऐसा इसलिए कि
राजा, राजकुमारियाँ, उसकी पत्नियाँ और
रखैल उन बर्तनों में दाखमधु पी सके। 3 तब
जो सोने के बर्तन यरूशलेम में मन्दिर[a] से
निकाले गए थे, उन्हें लाया गया। उन्हीं बर्तनों
में राजा अपने मंत्रियों, रानियों और रखेलियों
के साथ पीने लगा। 4 दाखमधु पीकर वे सभी
लोग सोने-चाँदी, पीतल, लोहे, लकड़ी और
पत्थर की बनी मूरतों[b] की बड़ाई करने लगे।
5 उसी समय एक इन्सान की सी उँगलियाँ
निकल कर दीपदान के सामने राजमहल की
दीवार के ऊपर कुछ लिखने लगीं। राजा
हाथ के उस हिस्से को देख पा रहा था जो
लिख रही थीं। 6 यह सब देख कर राजा डरा
और घबरा भी गया। उसकी कमर के जोड़
ढीले पड़ गए। काँपने की वजह से उसके
घुटने एक दूसरे से टकराने लगे। 7 तभी राजा
ने, मंत्रियों, कसदियों और भविष्य बताने
वालों को हाज़िर करवाने की आज्ञा दी। राज
महल में सभी बुद्धिजीवियों को लाए जाने पर
राजा बोला, “जो व्यक्ति लिखे हुए शब्दों
को पढ़ कर उस का मतलब मुझे बताए,
उसे बैजनी कपड़े[c] और गले में कण्ठमाला
पहनायी जाएगी। इसके अलावा राज्य पर
शासन करने वाला वह तीसरा जन होगा।
8 तब सभी बुद्धिमान[d] लोग अन्दर आए,
लेकिन लिखे हुए को पढ़ नहीं पाए, न ही
राजा को उस का अर्थ बतला सके। 9 इस
कारणवश बेलशस्सर राजा घबराया और डर
भी गया। उसके मंत्री[e] भी काफी परेशान हो
गए। 10 राजा और मंत्रियों[f] की बातों को सुन
कर रानी खाने के स्थान में आकर कहने
लगी, “हे राजा, आप हमेशा जीवित रहें,
आप न ही घबराएँ और न ही उदास हों।
11 आपके इस राज्य में दानिय्येल नाम का
एक आदमी है। आपके पिताजी ने उस का
नाम बेलतशस्सर रखा दिया था। उसमें पवित्र
ईश्वरों की आत्मा रहती है। आपके पिता के
राज्य में इस आदमी में प्रकाश, ज्ञान और
ईश्वरों के समान बुद्धि थी। राजा जी, आपके
पिता ने इस व्यक्ति को सभी ज्योतिषियों,
मंत्रियों, कसदियों और भविष्य बताने वालों
का मुखिया[g] ठहराया था। 12 क्योंकि इस
व्यक्ति में अच्छी आत्मा, ज्ञान, प्रवीणता,
स्वप्नों का अर्थ बताने, पहेलियाँ बुझने
और शक दूर करने की योग्यता पायी गयी
थी। इसलिए दानिय्येल को बुलाया जाना
चाहिए ताकि वह अर्थ बतला सके।” 13 तब
दानिय्येल को राजा के सामने अंदर बुला
गया। राजा ने दानिय्येल से पूछ-ताछ के
दौरान पूछा, “क्या तुम वही दानिय्येल हो,
जिसे उसके पिताजी यहूदा देश से यहूदी
गुलामों के साथ लाए थे? 14 मैंने तुम्हारे
बारे में सुना हैं कि परमेश्वर की आत्मा
तुम्हारे अन्दर रहती है और प्रकाश, प्रवीणता
तथा उत्तम बुद्धि तुम्हारे अंदर है। 15 देखो,
अभी पण्डितों[h] मंत्रियों को मेरे सामने लाया
गया था ताकि दीवार पर लिखा हुआ पढ़
कर मुझे उस का मतलब बताएँ, लेकिन वे
नाकामयाब रहे हैं। 16 लेकिन मैंने तुम्हारे बारे
में सुना है कि तुम रहस्य को खोल सकते हो
शक दूर कर सकते हो। इसलिए अब यदि
तुम उस लिखी हुयी बात का अर्थ बतला
सको, तो तुम्हें बैजनी रंग का कपड़ा और

[a] **5.3** यहूदियों के [b] **5.4** या देवताओं [c] **5.7** राजसी वस्त्र [d] **5.8** पण्डित [e] **5.9** प्रधान [f] **5.10** प्रधान
[g] **5.11** प्रधान [h] **5.15** ज्ञानी

गले में सोने की कण्ठमाला पहनायी जाएगी। इसके अलावा तुम मेरे राज्य में तीसरे व्यक्ति होंगे, जो शासन करेगा।" 17 दानिय्येल ने राजा से कहा, "आप अपने ईनाम[a] अपने पास ही रखें और जो बदले में देना चाहते हैं, वह सब किसी और को दें। लिखी हुयी बात का अर्थ मैं पढ़ कर सुनाऊँगा और उस का मतलब भी बताऊँगा। 18 हे राजा, परमेश्वर ने आपके पिता नबूकदनेस्सर को राज्य, प्रशंसा, इज़्ज़त और शान दी थी। 19 जो महिमा परमेश्वर ने उन्हें दी थी उसके कारण देश-देश के लोग और अलग-अलग भाषा बोलने वाले उनके सामने काँपते और थरथराते थे। वह जिसे चाहते थे उसे मार डालते थे। जिस को वह पसंद करते थे, उसे वह जिंदा रखते थे। जिसे वह चाहते थे, उसे ऊँचे ओहदे पर रख दिया करते थे। जिसे वह चाहते थे उसे गिरा दिया करते थे। 20 लेकिन जब उन्हें घमण्ड हो गया, आत्मा सख्त हो गयी यहाँ तक कि उन्हें राजा के पद से हटाया गया और सारी इज़्ज़त मिट्टी में मिल गयी। 21 लोगों के बीच से उन्हें निकाला गया, उनका मन भी जानवर सा हो गया। वह जंगली गदहों के बीच रहने लगे। बैलों की तरह वह घास खाने लगे। उनकी देह आकाश की ओस से भीगने लगी। जब उन्हें यह समझ आ गयी कि परम प्रधान परमेश्वर हैं जो लोगों के राज्य में अधिकार[b] रखते हैं। जिसे वह चाहते हैं उसी को अधिकारी ठहराते हैं। 22 इसके बावजूद हे बेलशस्सर, आप जो उसके बेटे हैं और सारी सच्चाई जानते हैं, फिर भी नम्र नहीं हुए। 23 लेकिन आपने स्वर्ग के प्रभु के खिलाफ़ सिर उठाया और उनके[c] भवन के बर्तन मँगवा कर अपने सामने रखे। उन्होंने अपने मंत्रियों, रानियों और रखेलियों के साथ उन बर्तनों में दाखमधु[d] पी। फिर चाँदी-सोने, पीतल, लोहे, लकड़ी और पत्थर के उन देवताओं[e] को जो न देखते, सुनते और कुछ जानते हैं, उनकी स्तुति[f] की। उन लोगों ने परमेश्वर को जिनके हाथ में आपके प्राण और सारा चलना-फिरना है, आदर नहीं दिया। 24 "इसलिए यह हाथ का हिस्सा उन्हीं परमेश्वर की तरफ़ से प्रगट किया गया और वे शब्द लिखे गए हैं। 25 वे शब्द है, मने, मने, तकेल और उपर्सीन। 26 इसका मतलब है, परमेश्वर ने आपके राज्य के दिनों की गिनती करके अन्त कर डाला है। 27 तकेल का मतलब है, आपको तराजू में तौला गया है और आपका वज़न कम है। 28 परेस अर्थात आपका राज्य बाँटकर मादियों और फ़ारसियों को दे दिया गया है। 29 तब बेलशस्सर की आज्ञा के मुताबिक दानिय्येल को बैजनी रंग के कपड़े और गले में सोने का हार पहनाया गया। ढिंढोरिए ने यह घोषणा भी की, कि राज्य में अब से अधिकार रखने वाला दानिय्येल ही होगा। 30 उसी रात कसदियों के राजा बेलशस्सर का खून कर दिया गया। 31 उसकी जगह दारा जो मादी जो बासठ साल का था, राजगद्दी पर बैठा।

6 दारा ने चाहा कि अपने राज्य के ऊपर एक सौ बीस ऐसे अधिकारी ठहराए जो पूरे राज्य में अधिकार रखें। 2 इन सभी के ऊपर तीन अध्यक्ष इसलिए ठहराए कि वे उन प्रबंधकों के ऊपर हों, इनमें से दानिय्येल एक था। प्रबंधक इन तीनों के प्रति जवाब दार थे, ताकि किसी तरह से राजा का नुकसान न हो। 3 यह देखने पर कि दानिय्येल में उत्तम आत्मा रहती है, उसे उन अध्यक्षों

[a] 5.17 दान [b] 5.21 प्रभुता [c] 5.23 परमेश्वर के [d] 5.23 शराब [e] 5.23 मूरतों [f] 5.23 उपासना

और प्रबंधकों[a] से ज़्यादा सम्मान मिला।
राजा तो यहाँ तक चाहता था कि अपने
सारे राज्य के ऊपर अधिकारी ठहरा दे।
4 तब अध्यक्ष और दूसरे अधिकारी प्रशासन
से संबन्धित कामों में दानिय्येल में दोष
ढूँढने लगे, लेकिन वह विश्वासयोग्य था।
उसके काम में कोई भूल या खोट नहीं
निकली, न ही कोई अपराध उस में पाया
गया। 5 तब वे कहने लगे, “हम दानिय्येल
के परमेश्वर की व्यवस्था[b] को छोड़ और
किसी बात में उसके विरोध में आरोप साबित
नहीं कर पाएँगे।” 6 तब वे अध्यक्ष और
अधिकारीगण बड़ी उतावली से राजा के पास
आकर कहने लगे, “हे राजा दारा, आप सदा
तक जीवित रहें। 7 राज्य के सारे अध्यक्षों,
गवर्नर, अधिकारियों, न्यायियों ने भी आपस
में सलाह-मशविरा किया, कि राजा एक ऐसी
कड़ी आज्ञा निकाले कि तीस दिन तक जो
कोई हे राजा, आपको छोड़ यदि किसी और
मनुष्य या देवता से प्रार्थना करे, तो उसे शेरों
की मांद में डाल दिया जाए। 8 इसलिए अब
हे राजा, ऐसी आज्ञा दीजिए और इस पत्र
पर हस्ताक्षर करें, जिस से यह बात मादियों
और फ़ारसियों के अटल कानून के अनुसार
बदली न जा सके। 9 दारा राजा ने राज़ी होकर
उस पत्र पर हस्ताक्षर कर दिया। 10 जब
दानिय्येल को मालूम पड़ा कि ऐसे दस्तावेज़[c]
पर हस्ताक्षर किया गया है, तो वह अपने घर
गया, जहाँ के ऊपर के कमरे की खिड़कियाँ
यरूशलेम की दिशा में खुली रहा करती थीं।
जैसी उसकी रीति[d] थी, वैसा ही वह दिन
में तीन बार घुटने टेककर प्रार्थना, धन्यवाद
करता था, करता रहा। 11 जब वे लोग वहाँ
पहुँचे तो दानिय्येल को अपने परमेश्वर के
सामने प्रार्थना करते और गिड़गिड़ाते पाया।
12 इसलिए वे राजा के पास जाकर राजा के
हुक्म के बारे में कहने लगे, “हे राजा क्या
आपने ऐसी राजाज्ञा पर दस्तखत नहीं किए,
कि जो कोई तीस दिन तक आपको छोड़
किसी इन्सान या देवता से प्रार्थना करेगा, वह
शेरों की मांद में डाल दिया जाएगा?” राजा
ने उत्तर दिया, “हाँ मादियों और फ़ारसियों
के अटल कानून[e] के अनुसार यह बात पक्की
है।” 13 तब वे राजा से बोले, “यहूदी गुलामों
में से दानिय्येल ने आपके आदेश को हल्की
फुल्की बात समझी और आपकी आज्ञा को
तोड़ा है। वह दिन में तीन बार प्रार्थना किया
करता है। 14 यह सुन कर राजा बहुत निराश
हो गया और दानिय्येल को बचाने का तरीका
सोचने लगा। वह सूरज डूबने तक उसे बचाने
की कोशिश करता रहा। 15 तब वे आदमी
राजा के पास आकर कहने लगे, “हे राजा,
यह जान रखो कि मादियों-फ़ारसियों में यह
कायदा-कानून है और जो आज्ञा या निषेधाज्ञा
राजा ठहराए वह बदल नहीं सकती।” 16 तब
राजा की आज्ञा के मुताबिक दानिय्येल को
लाकर शेरों की मांद में डाल दिया गया।
उस समय राजा ने दानिय्येल से कहा, “जिस
परमेश्वर की तुम आराधना करते हो, वही
तुम को बचाए।” 17 इसके बाद उस गड्ढे के
ऊपर एक पत्थर लाकर रख दिया गया। राजा
ने अपनी अँगूठी और प्रधानों[f] की अँगूठी
से मुहर लगा दी कि कोई फेर-बदल न कर
सके। 18 इसके बाद राजा अपने महल तो
लौट गया, लेकिन उस रात उसे भूख नहीं
लगी, किसी तरह का सुख-विलास न किया
और न ही वह सो सका। 19 सुबह-सवेरे जैसे
ही राजा उठा, तुरन्त वह शेर की मांद की

[a] **6.3** अधिकारियों [b] **6.5** नियम आदि [c] **6.10** पत्र [d] **6.10** आदत [e] **6.12** व्यवस्था [f] **6.17** मंत्रियों

तरफ़ बढ़ चला। 20 गड़हे[a] के पास आते ही
बड़ी दुख भरी आवाज से चिल्लाते हुए बोला,
“हे दानिय्येल, ज़िन्दा परमेश्वर के दास,
जिस परमेश्वर की तुम उपासना करते हो,
क्या वह तुम्हें बचा पाए?” 21 तब दानिय्येल
ने राजा से कहा, “हे राजा आप सदा काल
तक जीवित रहें। 22 इसलिए कि मैं परमेश्वर
की निगाह में निर्दोष पाया गया और आपके
खिलाफ़ भी कोई अपराध नहीं किया, मेरे
परमेश्वर ने अपना दूत भेज कर शेरों का
मुँह ऐसा बंद कर दिया, कि उन्होंने मेरा कोई
नुकसान नहीं किया।” 23 तब राजा ने बहुत
खुश होकर दानिय्येल को मांद में से निकालने
की आज्ञा दी। इसलिए उसे उसमें से निकाला
गया और उस पर किसी भी हानि का निशान
तक नहीं था, क्योंकि वह अपने परमेश्वर
पर भरोसा रखता था। 24 तब राजा ने यह
आदेश दिया, कि जिन लोगों ने दानिय्येल की
चुगली खायी थी, वे बाल-बच्चों और पत्नियों
सहित शेरों की मांद में डाल दिए जाएँ। वे
सभी मांद की सतह तक भी नहीं पहुँचे थे
कि शेरों ने झपटकर हड्डियों समेत उन्हें चबा
लिया। 25 तब दारा राजा ने सारी पृथ्वी पर
देश-देश और जाति-जाति के सभी लोगों और
तरह-तरह की भाषा बोलने वालों के पास
यह लिखा, “तुम सभी का कुशल हो। 26 मेरी
आज्ञा यह है कि जहाँ जहाँ तक मेरा राज्य
फैला हुआ है, वहाँ के लोग दानिय्येल के
परमेश्वर के सामने काँपते और थरथराते
रहें। क्योंकि वही जीवित और हमेशा-हमेशा
तक रहनेवाले परमेश्वर हैं। उनका राज्य
कभी नष्ट नहीं होने वाला है और उनकी
प्रभुता[b] सदा काल तक रहेगी। 27 जिस ने
दानिय्येल को शेरों से बचाया है, वही बचाने
वाले और छुड़ाने वाले हैं। वही स्वर्ग[c] में
और पृथ्वी[d] पर चिन्हों और चमत्कारों को
दिखाते हैं।” 28 इस तरह दारा और कुस्त्रू
फ़ारसी दोनों ही के शासनकाल में दानिय्येल
सुख-चैन से रहा।

7 बेबिलोन के राजा बेलशस्सर के पहले
साल में, दानिय्येल ने पलंग पर स्वप्न
और दर्शन देखे। उस ने वह स्वप्न लिख
लिया और बातों का वर्णन भी किया।
2 दानिय्येल ने बताया, “मैंने रात को यह
स्वप्न देखा कि समुन्दर पर चारों तरफ़ आँधी
चल रही है। 3 तब समुद्र में से चार बड़े-बड़े
जानवर जो एक से नहीं थे, निकल आए।
4 पहला जानवर शेर की तरह था और उसके
पंख उकाब के से थे। मैं यह देख ही रहा था
कि उसके पर नीचे जाने लगे और वह ज़मीन
पर से उठकर, इन्सान की तरफ़ पाँवों के बल
खड़ा किया गया। उसे इन्सान का सा मन[e]
दिया गया 5 फिर मैंने एक और जानवर देखा
जो भालू की तरह था, वह एक पांजर के बल
उठा हुआ था और उसके मुँह में दातों के बीच
तीन पसलियाँ थीं। लोग उससे बोल रहे थे,
‘उठो, ढेर सा मांस खाओ।’ 6 फिर मैंने चीते
की तरह एक और जानवर को देखा। उसकी
पीठ पर चिड़िया के से चार पंख थे। उस
जानवर के चार सिर थे और उसे अधिकार
भी दिया गया था। 7 इसके बाद मैंने स्वप्न
ही में देखा कि एक चौथा जानवर है। यह
भयंकर और डरावना और बहुत ताकतवर
था। उसके लोहे के बड़े-बड़े दाँत थे। वह
सब कुछ खा डालता और चूर-चूर करता
था। जो कुछ बचता था, उसे पैरों से रौंदता
था। वह दूसरे सभी जानवरों से भिन्न था और
उसके दस सींग थे। 8 ध्यान से सींगो को
देखते समय मैंने पाया कि उनके बीच एक

[a] 6.20 मांद [b] 6.26 शासन [c] 6.27 आकाश [d] 6.27 पृथ्वी [e] 7.4 हृदय

और छोटा सा सींग निकला उसकी ताकत
से उन पहले सींगो में से तीन उखाड़े गए।
फिर मैंने देखा कि इस सींग में इन्सान की
सी आँखें और बड़ा बोल बोलने वाला मुँह
भी है। 9 अन्त में मैंने देखा कि राजासन रखे
गए और अति प्राचीन विराजमान हुए। उनका
वस्त्र बर्फ़ सा सफ़ेद और सिर के बाल निर्मल
ऊन की तरह थे। उस का राजासन आग सा
और उसके पहिए धधकती हुयी आग के
से दिखे। 10 उस प्राचीन के सामने से आग
की धारा निकल कर कह रही थी। हज़ारों
लोग उनकी सेवा कर रहे थे। लाखों लोग
उनके सामने उपस्थित थे। तब जज लोग बैठ
गए और किताबें खोली गयीं। 11 उस समय
उस सींग का बड़ा बोल सुन कर मैं देखता
रहा। देखते-देखते आखिर में देखा कि उस
जानवर को मार डाला। उसकी देह धधकती
आग से भस्म की गयी। 12 बाकी जानवरों
का अधिकार उन से ले लिया गया, लेकिन
उनकी जान कुछ समय के लिए बचायी
गयी। 13 मैंने रात में स्वप्न देखा कि मनुष्य
की संतान सा कोई आकाश के बादलों के
साथ आ रहा है। वह उस अति प्राचीन
के पास पहुँचा और उसको वे उसके पास
लाए। 14 तब उनको ऐसी प्रभुता, महिमा और
राज्य दिया गया, ताकि देश-देश, जाति-जाति
और तरह-तरह की भाषा बोलने वाले उनके
अधीन रहें। यह भी कि उनका शासन हमेशा
तक अडिग और राज्य अविनाशी रहे। 15 जो
कुछ मैंने देखा, उसकी वजह से मेरा मन बहुत
परेशान हो गया 16 जो लोग पास में खड़े थे,
उन में से एक के पास जाकर मैंने उन तमाम
बातों का रहस्य पूछा। 17 उसने कहा, चार
बड़े जानवरों का मतलब चार राज्य हैं, जो
इस दुनिया में आने वाले हैं। 18 लेकिन परम
प्रधान के पवित्र लोग राज्य हासिल करेंगे
और हमेशा-हमेशा तक उसके अधिकारी बने
रहेंगे। 19 तब मेरे मन में यह आया कि उस
चौथे जानवर का भेद भी जान लूँ। यह बाकी
तीनों से भिन्न और बहुत भयंकर था जिस के
दाँत लोहे के और नाखून पीतल के थे। वह
सब कुछ खा डालता और चूर-चूर करता
था। वह बचे हुए को पैरों से रौंद डालता
था। 20 फिर उसके सिर के दस सींगो का भेद
और जिस नए सींग के निकलने से तीन सींग
गिर गए अर्थात जिस सींग की आँखें और
बड़ा बोल बोलने वाला मुँह और सब सींगों
से ज़्यादा भयंकर था, उस का अर्थ जानने
की इच्छा मुझ में पैदा हुयी। 21 फिर मैंने देखा
था कि वह सींग पवित्र लोगों के संग लड़ाई
करके उन पर उस समय तक ताकतवर भी
हो गया। 22 जब तक वह अति प्राचीन आए
और परम प्रधान के पवित्र लोग न्यायी[a] न
ठहरे और उन पवित्र लोगों के अधिकारी होने
का वक्त न आ पहुँचा। 23 वह बोला, "उस
चौथे जानवर का मतलब एक चौथा राज्य हैं
जो पृथ्वी के सभी दूसरे राज्यों से अलग ही
होगा। वह सारी पृथ्वी को बर्बाद करेगा और
चालाकी से चूर-चूर करेगा। 24 दस सींगों का
मतलब है कि उस राज्य में से दस राजाओं
का उदय होगा। उनके बाद उन पहिलों से
बिल्कुल अलग एक और राजा उठ खड़ा
होगा। यह तीन राजाओं को गिरा देगा। 25 वह
परम प्रधान के खिलाफ़ बातें कहेगा। वह
परम प्रधान के पवित्र लोगों को पीस डालेगा।
वह काल[b] और व्यवस्था[c] के बदल देने
की उम्मीद करेगा। यहाँ तक कि साढ़े तीन
साल तक वे सब उसके अधीन कर दिए
जाएँगे। 26 इसके बाद जज[d] बैठेंगे और उस
का अधिकार छीन कर मिटाया और बर्बाद

[a] **7.22** जज [b] **7.25** समयों [c] **7.25** नियम/कानून [d] **7.26** न्यायी

किया जाएगा। इस तरह से उस का अन्त
हो जाएगा। 27 तब राज्य, अधिकार और इस
पृथ्वी के शासन की महिमा[a], परम प्रधान
की प्रजा[b] को दी जाएगी। उनका राज्य कभी
खत्म नहीं होने वाला है। सभी शासन करने
वाले उनके अधीन होकर उन्हीं की आशा
मानेंगे। 28 'इस बात का वर्णन मैं अब कर
चुका, लेकिन मुझ दानिय्येल के मन में बड़ी
बेचैनी बनी रही और मैं डर गया। यह सब मैं
अपने मन में ही रखे रहा।

8 उस पहले दर्शन के बाद एक और बात
बेलशस्सर राजा के राज्य के तीसरे वर्ष
में, मुझ दानिय्येल को दर्शन में दिखायी गयी।
2 उस समय मैं एलाम नामक प्रान्त में, शूशन
नामक राजगढ़ में रहा करता था। दर्शन में मैंने
अपने आपको ऊलै नामक नदी के किनारे
पर देखा। 3 नदी के सामने दो सींग वाले मेंढ़े
को देखा। उसके दो सींग थे, जिन में से एक
अधिक बड़ा था। बड़ा वाला सींग दूसरे सींग
के बाद निकला था। 4 मैंने देखा कि यह मेंढा
पश्चिम, उत्तर, दक्षिण की तरफ़ सींग मारता
है। उसके सामने कोई भी जानवर ठहर नहीं
सकता था। उसके हाथ से कोई उसे बचा भी
नहीं सकता था। वह अपनी मर्जी से सब काम
करके बढ़ता जाता था। 5 मेरे सोचते-सोचते
मैं क्या देखता हूँ कि एक बकरा पश्चिम दिशा
से निकल कर सारी पृथ्वी पर ऐसा घूमने
लगा, कि चलते समय उस का पैर पृथ्वी
पर न छुआ। उस बकरे की आँखों के बीच
एक सींग था, जो देख सकता था। 6 जिस मेंढ़े
को मैंने नदी के सामने खड़ा देखा था, उसके
पास जाकर जलन की वजह से पूरी ताकत
से लपका। 7 झुँझलाते हुए वह उसके पास
आया और उसे मार कर उसके दोनों सींगों
को तोड़ दिया। मेंढा उस का मुकाबला नहीं
कर सका था। इसके बाद बकरे ने उसे ज़मीन
पर गिराकर रौंद डाला। इस तरह से मेंढ़े को
उसके हाथ से कोई बचा नहीं सका। 8 अब
बकरा डींगे मारने लगा। उसके ताकतवर
होने के बाद उस का बड़ा सींग टूट गया। उस
सींग के बदले, उसके चार सींग निकले जो
देखने लायक थे। ये चार सींग चारों दिशाओं
में बढ़ने लगे। 9 फिर इन में से और एक
छोटा-सा सींग निकला। यह सींग दक्षिण, पूर्व
और सब से महान देश की और बहुत ही बढ़
गया। 10 वह स्वर्ग की सेना तक बढ़ गया
और उसमें से और तारों में से भी तमाम को
पृथ्वी पर गिराकर रौंद डाला। 11 यहाँ तक
कि वह सेना के प्रधान तक भी बढ़ भी गया
और उस का रोज़ का होमबलि बंद कर दिया
गया। उस का पवित्र निवासस्थान भी गिरा
दिया गया। 12 लोगों के गुनाह[c] के कारण हर
रोज़ होमबलि के साथ फ़ौज भी उसके हाथ
में कर दी गयी। और उस सींग ने सच्चाई को
मिट्टी में मिला दिया। वह काम करते-करते
सफल भी हो गया। 13 तब मैंने एक पवित्र जन
को बोलते हुए सुना। फिर एक और पवित्र
जन ने उस पहले बोलने वाले से पूछा, "हर
दिन होमबलि और उजड़वाने वाले अपराध
के बारे में जो कुछ दर्शन देखा गया, वह
कब तक फलता रहेगा, अर्थात पवित्रस्थान
और सेना दोनों का रौंदा जाना कब तक होता
रहेगा?" 14 तब वह मुझ से बोला, "जब तक
शाम और सुबह दो हज़ार तीन सौ बार न
हों, तब तक वह होता रहेगा। इसके बाद
ही पवित्रस्थान शुद्ध किया जाएगा।" 15 दर्शन
में यह बात देख कर, मैं दानिय्येल यह सब
समझने की कोशिश करने लगा। तभी आदमी
का रूप धरे हुए कोई मेरे सामने खड़ा दिखाई

[a] 7.27 शान [b] 7.27 परमेश्वर के पवित्र लोग [c] 8.12 अपराध

दिया। 16 तब ऊलै नदी के बीच से एक
आदमी की आवाज सुनायी पड़ी, जो पुकार
कर कहता था, “हे जिब्राएल, उस व्यक्ति को
उसकी देखी हुयी बातें समझा दो।” 17 तब
मैं जहाँ खड़ा था, वहीं वह मेरे पास आया।
उसके आते ही मैं घबरा गया और मुँह के
बल गिर पड़ा। तब वह बोला, हे मनुष्य की
सन्तान[a] उन देखी हुयी बातों को समझ लो,
क्योंकि उनका पूरा होना आखिर के समय
में ही होवेगा। 18 उसके मुझ से बातें करते
समय मैं अपना मुँह ज़मीन की तरफ़ किए
हुए गहरी नींद में पड़ा था। लेकिन उसने मुझे
छू कर सीधा खड़ा कर दिया। 19 तब वह
बोला, “गुस्सा भड़कने के आखिर के दिनों
में जो कुछ होने वाला है, मैं तुम्हें बताना
चाहता हूँ। अन्त के ठहराए हुए समय में
वह सब पूरा हो जाएगा। 20 तुमने जो दो
सींग वाला मेंढा देखा है वह मादियों और
फ़ारसियों के साम्राज्य की तरफ़ इशारा है।
21 रोएँ वाला बकरा यूनान का साम्राज्य है।
उसकी आँखों के बीच निकलने वाला बड़ा
सींग पहला राजा है। 22 सींग जो टूट गया
और जिस के बदले चार सींग निकले, उस
का मतलब है कि उस जाति में से चार
राज्य उठ खड़े होंगे, लेकिन उनकी ताकत
उस पहले की सी नहीं होगी। 23 उन राज्यों
के आखिर के समय में जब अपराधी पूरी
तरह से ताकतवर हो जाएँगे, तब निर्दयी दृष्टि
वाला और पहेली बूझने वाला एक राजा उठ
खड़ा होगा। 24 वह बड़ा शक्तिशाली होगा,
लेकिन पहले के से राज्य की तरह नहीं। वह
अजीब तरीके से लोगों को बर्बाद करेगा।
वह सफल होता जाएगा और काम करता
जाएगा। वह शक्तिशाली और पवित्र लोगों
के झुण्ड का नाश करेगा। 25 उस का छल
उसकी चालाकी के कारण कामयाब होगा।
वह मन में घमण्डी होकर बिना किसी से
डरे बहुतों को बर्बाद कर डालेगा। वह सभी
अधिकारियों के खिलाफ़ भी खड़ा होगा।
लेकिन आखिर में किसी के हाथ से बिना
मार खाए टूट जाएगा। 26 सुबह और शाम के
बारे में जो कुछ तुमने देखा और सुना है, वह
सच है। लेकिन तुमने जो कुछ दर्शन में देखा
है, उसे अभी किसी को न बताना, क्योंकि
वह सब बहुत दिनों के बाद होगा।” 27 तब मैं
बहुत कमज़ोरी महसूस करने लगा और कुछ
दिन तक बीमार भी रहा। लेकिन फिर से उठ
कर राजा का काम-काज करने लगा। लेकिन
जो कुछ मैंने देखा था उससे मैं आश्चर्यचकित
था, क्योंकि उस अर्थ बताने वाला कोई नहीं
था।

9 मादी क्षयर्ष के बेटे द्वारा को कसदियों[b]
के देश पर राजा बनाया गया था।
2 उसके शासनकाल के पहले साल में मुझ
दानिय्येल ने शास्त्र के ज़रिए यह “सच्चाई
जान ली, कि यरूशलेम सत्तर साल बीत
जाने पर उजड़ जाएगा। इस बात की नबूवत
यिर्मयाह नबी ने की थी। 3 तब मैं अपना मुँह
प्रभु परमेश्वर की तरफ़ करके गिड़गिड़ाहट
के साथ दुआ माँगने लगा। मैंने रोज़ा रख
कर[c], टाट पहन और राख में बैठ, वरदान
माँगा। 4 मैंने परमेश्वर याहवे से इस तरह
प्रार्थना की और अपराधों को माना, “हे प्रभु,
आप महान और डरने लायक परमेश्वर हैं।
आप अपने प्रेम रखने वालों और आज्ञा मानने
वालों के साथ अपनी वाचा[d] को पूरा करते
हैं और करुणा करते[e] रहते हैं। 5 हम लोगो

[a] **8.17** औलाद [b] **9.1** बेबिलोनियों [c] **9.3** उपवास करके [d] **9.4** प्रतिज्ञा, वायदा [e] **9.4** तरस खाते

ने अपराध, कुटिलता, दुष्टता और बलवा[a] किया है। हम ने आपकी आज्ञाओं को तोड़ा और नियमों को नहीं माना है। 6 आपके जो सेवक[b] नबी लोग हमारे राजाओं, गर्वनरों, पूर्वजों और सब साधारण लोगों से आपकी तरफ़ से संदेश लाते थे, हम ने उनकी नहीं मानी। 7 हे प्रभु आप धर्मी[c] है। लेकिन हम लोगों को आज के दिन शर्मिन्दा होना पड़ता है। यरूशलेम में रहनेवाले सभी यहूदियों, पास में रहनेवाले, दूर रहनेवाले इस्राएलियों को लज्जित होना पड़ता है। ये वे ही हैं जिन्होंने आपका विश्वासघात किया था और आपने उन्हें देश-देश में तित्तर-बितर कर दिया था। 8 हे याहवे, हम लोगों ने अपने राजाओं, गर्वनरों और पूर्वजों सहित आपके खिलाफ़ गुनाह[d] किया। हमारे शर्मिन्दा होने का कारण यही है। 9 लेकिन हालांकि हम ने अपने परमेश्वर प्रभु से मुँह मोड़ लिया है, फिर भी आप दया के समुन्दर और माफ़ी की खान हैं। 10 हम अपने परमेश्वर याहवे की शिक्षा[e] सुनने के बाद भी उस पर नहीं चले, जो उनके नबियों[f] ने हमें दी थी 11 लेकिन सभी इस्राएलियों ने आपकी व्यवस्था[g] की परवाह नहीं की। वे उससे हट गए और आपकी नहीं सुनी। इसलिए जिस सज़ा के बारे में परमेश्वर के दास[h] की व्यवस्था में लिखा हुआ है, वह सज़ा हम पर आ गयी है, क्योंकि हम ने उनके विरुद्ध अपराध किया है। 12 इसीलिए उन्होंने हमारे और न्यायियों[i] के बारे में जो कहा था, उन्हें हम पर बड़ी मुसीबत डाल कर पूरा किया है। यहाँ तक कि जैसी मुसीबत यरूशलेम पर आ पड़ी है, वैसी इस दुनिया में कही भी नहीं आयी होगी। 13 जैसे मूसा की व्यवस्था में लिखा है, ठीक वैसा ही हुआ है। तौभी हम ने अपने परमेश्वर को मनाने के लिए न तो बिनती की न ही अपने गंदे कामों को छोड़ा और आपकी सच बातों पर गौर किया। 14 इसलिए याहवे ने सोच-समझ कर हम पर मुसीबत डाली है। इसलिए कि हमारे याहवे परमेश्वर जितने काम करते हैं, उन सभी में ईमानदार हुआ करते हैं, लेकिन हम लोगों ने उनकी सुनीं ही नहीं। 15 अब हे हमारे परमेश्वर, हे प्रभु आप अपनी प्रजा[j] को अपने ताकतवर हाथों से मिस्र की गुलामी से निकाल लाए। उनका नाम आज तक मशहूर है। लेकिन हम ने अपराध किया है और दुष्टता की है। 16 हे प्रभु, हमारे अपराधों और हमारे पूर्वजों के अधर्म के कामों की वजह से यरूशलेम की और आपकी प्रजा की, हमारे आस-पास के लोगों की तरफ़ से बदनामी हो रही है। फिर भी आप अपने सब धर्म[k] के कामों के कारण अपना गुस्सा और जलजलाहट अपने नगर यरूशलेम पर से उतार दीजिए, जो आपके पवित्र पर्वत पर बसा है। 17 हे हमारे परमेश्वर अपने सेवक की बिनती सुन कर अपने उजड़े हुए पवित्रस्थान पर अपने मुख[l] की रोशनी चमकाइए। यह अपने नाम की खातिर कीजिए। 18 हे मेरे परमेश्वर कान लगा कर, आँख खोलकर हमारी उजड़ी हालत और उस नगर को भी देखिए जो आपका कहलाता है, क्योंकि हम जो आपके सामने गिड़गिड़ा रहे हैं, वह हमारे अपने धर्म[m] कामों को सामने लाकर नहीं कर रहे हैं। हम आपकी बड़ी दया ही के कामों पर भरोसा रख कर करते हैं। 19 हे प्रभु,

[a] 9.5 विद्रोह [b] 9.6 दास [c] 9.7 सच्चे और खरे [d] 9.8 अपराध, अपराध [e] 9.10 तालीम [f] 9.10 सेवकों [g] 9.11 नियम, आज्ञाएँ [h] 9.11 सेवक [i] 9.12 जजों [j] 9.15 कौम, लोग [k] 9.16 न्याय, सच्चाई, खराई [l] 9.17 उपस्थिति [m] 9.18 पुण्य और अच्छे

सुन लीजिए, गुनाह[a] माफ़ कर दीजिए। हे प्रभु, जो करना है, बिना देरी किए हुए उसे कर डालिए। हे मेरे परमेश्वर आपका नगर और आपकी प्रजा आपकी ही कहलाती है,, इसलिए अपने नाम की खातिर ऐसी कीजिए।
20 इस तरह मैं प्रार्थना करता, अपने और अपने जाति भाईयों के अपराध को मानता रहा। मैं परमेश्वर याहवे के सामने उनके पवित्र पहाड़ के लिए गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करता रहा। 21 तब पहली बार दर्शन के वक्त दिखे जिब्राएल ने आकर मुझे छू लिया। बहुत तेज गति से उड़ने की आज्ञा पाकर शाम के अन्नबलि के समय वह आया और भूमि समझ कर मुझ से बातचीत करने लगा।
22 वह बोला, "हे दानिय्येल मैं बुद्धि और समझ देने के लिए भेजा गया हूँ। 23 जब तुम गिड़गिड़ाकर प्रार्थना कर रहे थे, तभी तुम्हारे पास आने का हुक्म दिया गया था। इसलिए मैं तुम्हें यह बताने आया हूँ, कि तुम अति प्रिय ठहरे हो। इसलिए उस विषय को समझ लो और दर्शन का मतलब जान लो। 24 "तुम्हारे लोगों और तुम्हारे पवित्र नगर के लिए सत्तर हफ्ते रखे गए हैं, कि उनके आखिर तक अपराध का होना बन्द हो जाए, गुनाह का अन्त हो और सारी बुराईयों का प्रायश्चित्त किया जाए। हमेशा-हमेशा की धार्मिकता ज़ाहिर की जाए। इसके साथ ही दर्शन और भविष्यवाणी पर छाप की जाए और परमपवित्र का अभिषेक किया जाए।
25 इसलिए यह जान लो और समझ लो, कि यरूशलेम को फिर से बसाने की आज्ञा के निकलने से लेकर अभिषेक प्रधान के समय तक सात सप्ताह बीतेंगे। फिर बासठ हफ्तों के बीत जाने पर, अभिषिक्त पुरुष काटा जाएगा। उसके हाथ कुछ न लगेगा। आने वाले प्रधान की प्रजा नगर और पवित्रस्थान को बर्बाद तो करेगी। लेकिन उस प्रधान का अन्त ऐसा होगा जैसे बाढ़ से होता है। फिर भी उसके अन्त तक लड़ाई होती रहेगी, क्योंकि उस का उजड़ जाना निश्चिय ठान लिया गया है। चौक और खाई सहित वह नगर दुख के समय में फिर बसाया जाएगा।
26 बासठ सप्ताहों के बीतने पर अभिषिक्त परुष काटा जाएगा: वह कुछ भी प्राप्त न करेगा; और आनेवाले प्रधान के लोग नगर और पवित्रस्थान को बर्बाद तो करेंगे, लेकिन उस प्रधान का अन्त ऐसा होगा जैसे बाढ़ से होता है: फिर भी उसके अन्त तक लड़ाई जारी रहेगी; क्योंकि उसका उजड़ जाना पक्का हो चुका है। 27 वह प्रधान एक सप्ताह के लिए बहुतों के साथ मज़बूत वाचा बाँधेगा, लेकिन आधे सप्ताह के बीत जाने पर वह मेलबलि और अन्नबलि बंद कर देगा। तब कंगूरे पर उजाड़ने वाली चीज़ दिखायी देगी और ज़रूर ही ठनी हुयी बात के खत्म होने तक परमेश्वर का क्रोध उजाड़ने वाले पर पड़ा रहेगा।"

10 फ़ारस देश के राजा कुस्त्रू के शासनकाल के तीसरे साल में दानिय्येल[b] पर एक बात प्रगट की गयी। वह यह कि एक बड़ी लड़ाई[c] होगी। उसे यह बात समझ भी आ गयी। 2 उसके बाद मैं दानिय्येल तीन सप्ताह तक दुख मनाता रहा।
3 उन तीन हफ्तों के पूरे होने तक मैंने न तो मज़ेदार खाना खाया और न मांस या दाखमधु का सेवन किया, न ही अपनी देह में तेल लगाया। 4 पहले महीने के चौबीसवें दिन को जब मैं हिद्देकेल नामक नदी के किनारे पर था, 5 तब मैंने देखा कि सन के कपड़े पहने

[a] 9.19 अपराध, अपराध [b] 10.1 बेलतशस्सर [c] 10.1 युद्ध

और उफाज़ देश के कुन्दन से कमर बाँधे हुए
एक आदमी खड़ा है। 6 उसकी देह फ़िरोज़ा
की तरह, उस का चेहरा बिजली की तरह
उसकी आँखें जलते दीपक की सी, उसकी
बाहें और पाँव चमकाए हुए पीतल के से
और उसकी आवाज भीड़ की सी थी। 7 सिर्फ
मुझ दानिय्येल ही ने उसे देखा था। मेरे संगी
साथियों ने उसे नहीं देख। लेकिन फिर भी
वे बहुत थरथरा रहे थे। वे कहीं छिपने के
लिए भाग जाना चाहते थे। 8 अकेला मैं यह
अजीब दर्शन देखता रहा। मैं अपने में बड़ी
कमज़ोरी भी महसूस करता रहा और डर से
भी भर गया था। 9 उस आदमी की कही हुयी
बातों को सुन कर मैं मुँह के बल गिर पड़ा
और गहरी नींद में ज़मीन पर औंधें मुँह पड़ा
रहा। 10 फिर किसी ने अपने हाथ से मेरी देह
को छू कर उठाया और घुटनों तथा हथेलियों
के बल थरथराते हुए बैठा दिया 11 तब उसने
मुझ से कहा, हे दानिय्येल, अति प्रिय पुरुष,
जो कुछ मैं तुम से कहता हूँ, उसे समझो
और सीधे खड़े हो जाओ, मुझे अभी तुम्हारे
पास भेजा गया है।" उसके यह कहते ही मैं
खड़ा हो गया, लेकिन मेरा थरथराना जारी
रहा। 12 फिर वह मुझ से बोला, हे दानिय्येल
डरो मत, क्योंकि पहले ही दिन से जब तुमने
समझने-बूझने के लिए मन लगाया और अपने
परमेश्वर के सामने खुद को नम्र किया, उसी
दिन से तुम्हारी सुनी गयी और इसीलिए मैं आ
गया हूँ। 13 फ़ारस के राज्य का प्रधान इक्कीस
दिन तक मेरा मुकाबला करता रहा, लेकिन
मीकाएल जो मुख्य प्रधानों में से है, वह मेरी
मदद के लिए आया। इसलिए मैं फ़ारस के
पास रहा। 14 अब मैं तुम्हें समझाने आया हूँ
कि आखिर के दिनों में तुम्हारे लोगों की क्या
हालत होगी। क्योंकि जो दर्शन तुमने देखा है,
वह कुछ दिनों के बाद पूरा होगा।" 15 जब
यह आदमी मुझ से ऐसी बातें कह चुका,
तब मैंने नीचे भूमि की तरफ़ मुँह किया और
खामोश रह गया। 16 तब मनुष्य की संतान के
समान किसी ने मेरे ओंठ छुए और मैं बोलने
लगा। जो मेरे सामने खड़ा था, उससे मैंने
कहा, "हे मेरे प्रभु, दर्शन की बातों के कारण
मुझको दर्द सा उठा और मुझ में कुछ भी
ताकत नहीं रही। 17 इसलिए प्रभु का दास[a]
कैसे बातें कर सके? क्योंकि मेरी देह में न तो
कुछ ताकत रही न ही सांस ले पा रहा था।"
18 तब मनुष्य के समान किसी ने मुझे छू कर
फिर से मेरी हिम्मत बढ़ायी। 19 वह बोला,
"हे अति प्रिय पुरुष, डरो मत, तुम्हें शांति
मिले, बेचैन मत हो, हिम्मत रखो।" उसके
यह कहने पर मुझे बड़ी हिम्मत मिली और
मैंने कहा, "हे मेरे प्रभु, आप से मुझे हिम्मत
मिली है, अब बोलिए।" 20 तब वह बोला,
"क्या तुम्हें मेरे यहाँ आने का कारण मालूम
है? अब मैं लौट रहा हूँ ताकि फ़ारस के प्रधान
से लड़ूँ। जब मैं निकलूँगा, तब यूनान[b] का
प्रधान आएगा। 21 सत्य से भरी हुयी किताब
में जो कुछ लिखा है, वह मैं तुम्हें बता रहा
हूँ। उन प्रधानों के खिलाफ़, तुम्हारे प्रधान
मीकाएल को छोड़ मेरे साथ रहने वाला और
कोई भी नहीं है।"

11 मादी राजा, दारा के शासन के पहले
साल में उसको हिम्मत और ताकत
देने के लिए मैं खड़ा हो गया 2 अब मैं तुम्हें
सच्चाई बतला रहा हूँ। देखो, फ़ारस के राज्य
में तीन और राजा आएँगे। उनमें चौथा राजा
अमीर होगा। फिर वह शक्तिशाली होने के
कारण लोगों को यूनान के खिलाफ़ उभारेगा
3 उसके बाद एक ताकतवर राजा उठेगा और

[a] **10.17** सेवक [b] **10.20** ग्रीस

अपनी सीमा बढ़ाएगा। वह अपनी मनमर्ज़ी
करेगा। 4 जब वह बहुत बढ़ जाएगा, तब
टूट भी जाएगा। वह चारों दिशाओं में बिखर
जाएगा। उसके राज्य की ताकत जैसी पहले
थी, नहीं रहेगी। उसके वंश को कुछ न
हासिल होगा। उस का राज्य उखड़ने के बाद
दूसरों को मिल जाएगा। 5 तब दक्षिण देश
का राजा मज़बूत हो जाएगा। लेकिन उस
का एक गवर्नर ज़्यादा ताकतवर हो जाएगा।
6 बहुत सालों के बाद वे दोनों आपस में
मिल जाएँगे। वे दक्षिण देश के राजा की बेटी
उत्तर देश के राजा के पास शान्ति की वाचा
बान्धने को आएगी। लेकिन उसकी ताकत
बनी नहीं रहेगी। वह राजा और उस का नाम
खत्म हो जाएगा। वह महिला अपने पहुँचाने
वालों और अपने पिता और संभालने वालों
सहित अलग कर दी जाएगी 7 फिर उसकी
जड़ों में से एक डाल पैदा होकर उसकी
जगह में बढ़ेगी। वह फ़ौज के साथ उत्तर के
राजा के गढ़ में दाखिल होगा और उन से
लड़कर जीतेगा 8 तब वह उनके देवताओं की
ढली हुई मूरतों और सोने-चान्दी के खूबसूरत
बर्तनों को छीन कर मिस्र ले जाएगा। इसके
बाद वह कुछ साल उत्तर के राजा के खिलाफ़
कुछ न करेगा 9 तब वह राजा दक्षिण देश
के राजा के देश में आएगा और फिर अपने
देश लौट जाएगा। 10 उसके बेटे लड़ाई झगड़ा
करके बड़े-बड़े दल इकट्ठा करेंगे। वे तेज
बहती नदी की तरह आकर देश के बीच
होकर जाएँगे। लौटते समय वे झगड़ा मचाते
जाएँगे। 11 तब दक्षिण देश का राजा चिढ़
जाएगा और निकल कर उत्तर देश के उस
राजा से लड़ाई करेगा वह राजा लड़ने के लिए
बड़ी भीड़ इकट्ठी करेगा लेकिन वह भीड़
उसके अधीन हो जाएगी। 12 उस भीड़ को
वश में करने के बाद उस का मन घमण्ड से
भर जाएगा। वह लाखों लोगों को गिराएगा,
लेकिन वह जीत न पाएगा। 13 क्योंकि उत्तर
देश का राजा लौटकर पहले से ज़्यादा बड़ी
भीड़ इकट्ठा करेगा। बहुत दिनों, यहाँ तक कि
बहुत सालों के बीत जाने के बाद वह ज़रूर
बड़ी फ़ौज और दौलत लिए हुए आएँगे।
14 उन दिनों में बहुत से लोग दक्षिण के राजा
के खिलाफ़ उठेंगे। यहाँ तक कि तुम्हारे लोगों
में से भी बलात्कारी लोग उठ खड़े होंगे।
इस तरह दर्शन की बात पूरी होगी, लेकिन
वे ठोकर खाकर गिरेंगे 15 तब उत्तर देश का
राजा आकर किला बान्धेगा और मज़बूत
नगर ले लेगा। दक्षिण देश के प्रधान और
वीर खड़े नहीं रह पाएँगे। 16 तब जो भी
उनके खिलाफ़ आएगा, वह अपनी इच्छा
पूरी करेगा। वह हाथ में बर्बादी लिए हुए
बड़े देश में भी खड़ा होगा। कोई उस का
मुकाबला न कर पाएगा 17 तब वह अपने
राज्य की पूरी ताकत से तमाम सीधे लोगों
को अपने साथ लिए आएगा। वह खुद के
हिसाब से काम करेगा। वह उसे एक महिला
इसलिए देगा, ताकि उस का राज्य बिगड़
जाए। वह महिला न स्वयं अटल रहेगी,
न ही उस राजा की वह होगी। 18 तब वह
द्वीपों की ओर अपना चेहरा करके बहुतों
को ले लेगा लेकिन एक सेनापति उसके
घमण्ड को चूर-चूर कर डालेगा। उसे उस
घमण्ड की सजा भी देगा 19 तब वह अपने
किलों की तरफ़ चेहरा करेगा और वह ठोकर
खा कर गिर जाएगा। उस का नामो-निशां
मिट जाएगा 20 तब उसकी जगह में कोई
ऐसा उठ खड़ा होगा, जो राज्य में अन्धेर
करने वाले को घुमाएगा। कुछ दिन बीत
जाने पर बिना गुस्सा किए या युद्ध किए
वह बर्बाद हो जाएगा। 21 उसकी जगह में
एक नीच आदमी उठ खड़ा होगा, जिस की

इज़्ज़त पहले तो न होगी। लेकिन इसके
बावजूद सुख-चैन के समय आकर चापलूसी
की बातों से राज्य को हासिल कर लेगा।
22 उसकी बाजू रूपी बाढ़ से लोग, यहाँ तक
कि वाचा का प्रधान भी बह कर बर्बाद हो
जाएँगे। 23 क्योंकि वह उसके साथ वाचा
बान्धनें के बावजूद धोखा-धड़ी करेगा कुछ
ही लोगों को साथ लेकर वह जीत जाएगा।
24 जब शान्ति होगी वह प्रान्त के उत्तर भाग
पर हमला करेगा। वह ऐसा करेगा जो न
उसके पुरखाओं और उनके पुरखाओं ने कभी
किया होगा। वह लूटी हुयी दौलत का बाँटा
करेगा। वह कुछ समय तक मज़बूत शहरों
पर कब्ज़ा करने का विचार करेगा 25 फिर
वह दक्षिण देश के राजा के खिलाफ़ अपनी
फ़ौज को बढ़ाएगा और दक्षिण देश का राजा
अपनी पूरी ताकत से लड़ने के बावजूद हार
जाएगा। 26 जिन को वह खाना खिलाएगा,
वही उसे हरवा देंगे। उसकी फ़ौज बाढ़ की
तरह चढ़ेगी, लेकिन बहुत से लोग हताहत
होंगे 27 तब उन दोनों राजाओं के मन बुराई
करने में लग जाएँगे। यहाँ इस सीमा तक
कि एक मेज़ पर बैठ कर एक दूसरे से झूठ
बोलेंगे। लेकिन इस से कोई हल न निकलेगा।
क्योंकि इन सभी बातों का अन्त तय किए
हुए समय पर होगा 28 तब उत्तर देश का
राजा बड़ी लूट लेकर अपने देश लौटेगा।
उस का मन पवित्र आत्मा के खिलाफ़ होने
लगेगा। अपनी मनोकामना को पूरा करके
वह अपने देश वापस जाएगा। 29 एक तय
समय पर वह फिर दक्षिण हिस्से की ओर
जाएगा लेकिन पिछली बार की तरह उस से
कुछ बन नहीं पड़ेगा, 30 कित्तियों के जहाज़
उसके खिलाफ़ आएँगे और वह निराश होकर
वापस लौटेगा वह पवित्र आत्मा पर चिढ़ कर
अपनी इच्छा पूरी करेगा वह लौटेगा और
वाचा तोड़ने वालों से निबटेगा 31 तब उसके
मदद करने वाले खड़े होकर मज़बूत पवित्र
स्थान को अपवित्र करेंगे और हर दिन की
होमबलि को बन्द करेंगे। वे लोग उस घिनौनी
चीज को खड़ा करेंगे जो उजाड़ लाती है।
32 जो उस वाचा को तोड़ डालेंगे, उन से वह
चापलूसी करेगा और बिगाड़ देगा, लेकिन
जो लोग अपने परमेश्वर को नज़दीकी से
जानेंगे, वे बड़े काम करेंगे। 33 सिखाने वाले
बुद्धिमान लोगों को समझाएँगे, फिर भी वे
बहुत समय तक तलवार से छिद कर और
आग में जलकर और गुलाम बन कर लुट
कर बड़े दुख में फँस जाएँगे। 34 थोड़ा बहुत
वे संभल जाएँगे, लेकिन जो लोग ईमानदार
नहीं हैं, चिकनी-चुपड़ी बातें कह कर उन से
मिल जाएँगे। 35 शिक्षा देने वालों में से तमाम
गिर जाएँगे[a]। ऐसा इसलिए ताकि परखे जाएँ
ओर शुद्ध किए जाएँ। यह हालत आखिर तक
बनी रहेगी। समय आने पर सब समाप्त होगा
36 जैसा उस का[b] मन कहेगा, वह करेगा।
वह अपने आप को सभी देवताओं से बढ़
कर बतलाएगा। वह परमेश्वर के खिलाफ़
भी बोलेगा। जब तक परमेश्वर का गुस्सा[c]
शान्त न हो जाए वह कामयाब होता जाएगा।
जो बातें निश्चित हैं, वे होकर रहेंगी। 37 अपने
पुरखाओं के देवताओं को वह अहमियत
नहीं देगा। स्त्रियों के प्रति उसे लगाव न
होगा, न ही किसी देवता को चाहेगा। वह
अपने आप को सब से बढ़ कर दिखाएगा
38 अपनी राजगद्दी पर रह कर वह मज़बूत
गढ़ों के देवता को ही इज़्ज़त देगा, जिसे
उसके पूर्वज तक नहीं जानते थे। कीमती
चीजें, जैसे सोना, चाँदी, मणि और मनमोहक
वस्तुएँ वह चढ़ाएगा 39 उस अनजान देवता

[a] **11.35** असफल होंगे [b] **11.36** राजा का [c] **11.36** न्याय

की मदद से वह लड़ाई करेगा। जो उसे
मानेगा, उस वह इज़्ज़त देगा। ऐसे लोगों को
वह दूसरों पर अधिकार देगा। वह अपने
फ़ायदे के लिए अपने देश की ज़मीन को बाँट
देगा 40 आखिर के समय में दक्षिण देश का
राजा उसको सींग मारने लगेगा। लेकिन उत्तर
देश का राजा उस पर तूफ़ान की तरह बहुत
से रथ-सवार और जहाज़ के साथ हमला
करेगा। इस तरह से वह बहुत से देशों में
फैल जाएगा और उनमें से निकल जाएगा
41 वह सब से महान देश में भी आएगा उस
समय बहुत से देश उजड़ जाएँगे। लेकिन
एदोमी, मोआबी और खास-खास अम्मोनी
आदि लोगों के देश उसके हाथ में चले
जाएँगे। 42 बहुत से देशों पर वह अपना हाथ
बढ़ाएगा। यहाँ तक कि मिस्र देश भी बच न
पाएगा 43 वह मिस्र के सोने-चाँदी के खज़ानों
और सभी लुभाने वाली चीजों का मालिक हो
जाएगा। लूबी और कूशी लोग भी उसके पीछे
हो लेंगे। 44 उसी समय वह पूरब और उत्तर
दिशाओं से खबर सुनकर घबरा जाएगा वह
गुस्से की वजह से बहुतों का बर्बाद करना
चाहेगा 45 वह दोनों समुन्दरों के बीच पवित्र
शिरोमणि पहाड़ के पास अपना शाही तम्बू
खड़ा कराएगा। इतना सब होने के बावजूद
उस का अन्त आ जाएगा लेकिन कोई उस
का मददगार न रहेगा।

12 तभी मीकाएल नामक बड़ा
प्रधान, जो तुम्हारे जाति भाईयों
की तरफ़दारी करने को खड़ा रहता है ,
उठ जाएगा वह मुसीबतों का समय होगा,
लेकिन उस समय से तुम्हारे लोगों में से
जितनों के नाम परमेश्वर की किताब में
लिखे हुए है, वे बच जाएँगे। 2 जो मर चुके
होंगे वे जी उठेंगे। बहुत से हमेशा के जीवन
के लिए और बहुत से अपनी बदनामी और
हमेशा तक बहुत घिनौने ठहरने के लिए.
3 तब शिक्षा देने वालों की चमक आकाश
मण्डल की तरह होगी। जो बहुतों का
परमेश्वर से मेल कराते हैं, वे सदा तारों की
तरह चमकते रहेंगे। 4 लेकिन हे दानिय्येल,
तुम इस किताब पर मुहर लगा कर आखिर
के दिनों तक इसे बन्द कर दो। तमाम लोग
पूछ-ताछ करेंगे। खोजबीन करेंगे और ज्ञान
ऊँची सीमा तक पहुँच जाएगा। 5 इन सब
बातों को सुनने के बाद, मुझ दानिय्येल ने
जब आँख उठायी, तो देखा, कि दो आदमी
खड़े हैं। एक आदमी नदी की इस ओर
दूसरा नदी के दूसरी ओर। 6 इसके बाद जो
आदमी सन के कपड़े पहने नदी के पानी के
ऊपर था, उससे उन आदमियों में से एक
ने पूछा, “ये अजीब काम कब समाप्त हो
जाएँगे?” 7 तब जो व्यक्ति सन के कपड़े
पहने नदी के पानी के ऊपर था, उसने मेरे
सुनते ही दाहिना और बायाँ हाथ स्वर्ग की
ओर करके सदा-जीवित रहनेवाले की शपथ
खा कर कहा, “यह हालत साढ़े तीन साल
तक रहेगी। जब पवित्र प्रजा की ताकत
टूटते-टूटते खत्म हो जाएगी, तब ये बातें
पूरी होंगी।” 8 ये मैं सुन रहा था, लेकिन
कुछ समझ में नहीं आता था। तब मैं बोल
उठा, “हे प्रभु इन बातों का अन्त परिणाम
क्या होगा?” 9 उसने कहा, “चले जाओ
दानिय्येल, अन्त के दिनों के लिए ये बातें
गुप्त रखी गयी हैं और इन पर मुहर लगायी
जा चुकी है। 10 बहुत से लोग अपने आपको
शुद्ध करेंगे, लेकिन दुष्ट[a] अपने अविश्वास
में और बुराई में बने रहेंगे। ये सभी बातें
अविश्वासी और दुष्ट समझ न पाएँगे। केवल

[a] **12.10** अविश्वासी

बुद्धिमान लोग ही सम्मान पाएँगे। 11 जब
से हर दिन होमबलि उठाया जाएगी और
वह घिनौनी चीज जो उजाड़ करा देती है,
स्थापित की जाएगी, तब से बारह सौ
नब्बे दिन बीतेंगे। 12 वह व्यक्ति सचमुच में
आशीषित है जो धीरज धरते-धरते एक
हज़ार तीन सौ पैंतीस दिन तक पहुँचता है।
13 अब तुम जाओ और इन्तज़ार करो और
आराम भी। उन दिनों के अन्त में तुम अपने
स्वयं के मार्ग पर खड़े होगे।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com